प्रश्न — क्यांजित्था के जीवन-चरित्र एवम् उपलब्धी पर प्रकाश डालें।

बर्मा के इतिहास में क्यांजित्था का शासन काल महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस प्रतिभाशाली राजा के शासनकाल में बर्मा का राजनीतिक स्तर काफी ऊँचा हो गया था। काफी जनप्रिय होने के बाद भी समय समय पर इसे भीषण कष्टों का सामना करना पड़ा। क्यांजित्था के इतिहास का पता बर्मा में प्रचलित किंवदन्तियों तथा इसके दौहित्र प्रलौंग सिंयु के लेख से चलता है।

श्रीनिरुद्ध के बाद बर्मा का शासक इसकी उपपत्नी वैशाली की राजकुमारी पंचकल्याणी का पुत्र क्यांजित्था बना। क्यांजित्था का जीवन काल रोचक घटनाओं से भरा है। लोकोक्तियों के आधार पर ऐसा कहा जाता है कि क्यांजित्था के जन्म के बाद ज्योतिषियों ने यह बताया था कि यह बालक अपने पिता की मृत्यु का कारण बनेगा अतः श्रीनिरुद्ध ने इसे जान से मार डालने की कोशिश की परन्तु इसे सफलता नहीं मिल सकी क्योंकि क्यांजित्था सदैव इसकी आँखों से दूर रहा। बड़े होने पर इसकी सैन्य प्रतिभा से प्रभावित होकर श्रीनिरुद्ध ने इसे अपनी सेना में रख लिया।

1057 ई० में मोन आक्रमण के समय क्यांजित्था उत्तर की ओर भाग गया लेकिन अवसर पाते ही

दक्षिण बर्मा पर मोन राज्य की राजधानी थाटन पर आक्रमण करके मोन सेना को परास्त किया। इसी समय इसकी माता पंचकल्याणी के दुश्चरित्र समझ उसकी हत्या कर दी गयी। इस घटना के बाद क्यांजित्था के पाँव गलत दिशा में पड़ गये, वह अपनी सौतेली माता के प्रेम पाश में फँस गया। इस कारण अनिरुद्ध पुनः इसे मारने का षड़यंत्र करने लगा परन्तु असफल रहा और क्यांजित्था अपने देश से भाग गया जहाँ से वह 1077 ई० में अपने पिता की मृत्यु के बाद ही देश वापस लौटा।

अनिरुद्ध की मृत्यु के बाद पगान का शासक अलाउंग शाबू बना। ~~जो अपने~~ जिसकी अयोग्यता से लाभ उठाकर मोनों ने विद्रोह कर दिया, इस विद्रोह में शाबू मारा गया और पगान पर मोनों का शासन हो गया। अवसर पाते ही क्यांजित्था ने मोनों को पराजित कर पगान को पुनः अपने अधिकार में कर लिया। इसके राज्यारोहण के संबंध में विद्वानों में मतभेद है परन्तु अधिकांश विद्वानों ने इसके राज्यारोहण की तिथि 1084 ई० माना है। राज्यारोहण के बाद इसने त्रिभुवनादित्य धर्मराज की उपाधि धारण की। इसका राजतिलक शिनअर्हन नामक राजपुरोहित के हाथों हुआ।

अनिरुद्ध की भाँति क्यांजित्था भी एक वीर शासक था। इसने ~~अस~~ संपूर्ण अराकान को विजित कर अपने राज्य में मिला लिया। इस समय यहाँ के वर्तमान

शासन ने संपूर्ण बर्मा में आतंक मचा दिया था। परन्तु पूर्व जन्म की बातों पर विश्वास करके कि, अराकान का शासक पिछले जन्म में उसका मित्र था, उसका वध न करके उसे सेना सहित अराकान भेज दिया जहाँ उसने क्यांजित्था की अधीनता स्वीकार कर ली जिससे क्यांजित्था का दक्षिणी अराकान पर अधिकार हो गया जो उसके पिता द्वारा लेना नहीं हो सका था।

क्यांजित्था के समय में बर्मा और भारत के मध्य घनिष्ठ संबंध थे। भारत से प्रभावित होकर बर्मी संस्कृति तथा पगान ~~की धार्मिक~~ धर्म की प्रगति हो रही थी। इस समय यहाँ बौद्धधर्म का प्रचलन बहुत जोरों से था, बर्मी लोग यहाँ से भारत में बोधगया जाया करते थे। लोकोक्तियों से पता चलता है कि ~~इसी~~ इसके काल में भारत से आठ बौद्ध यहाँ आये और तीन महीने तक यहाँ रहकर भारतीय स्थापत्य तथा शिल्पकला का प्रचार करते रहे। इस संदर्भ में Prof Harvey का कथन है कि उड़ीसा के प्रसिद्ध सूर्यमंदिर के आदर्श पर क्यांजित्था ने आनंदपित्था का निर्माण करवाया, जो बर्मी बौद्धधर्म का प्रधान केन्द्र बना, ~~यहाँ बौद्धधर्म~~ यहाँ भगवान बुद्ध की एक प्रतिमा स्थापित है जिसके दोनों ओर दो महापात्र प्रतियाँ घुटने टेके बैठी है। जिसमें एक प्रति बौद्धभिक्षु तथा दूसरी क्यांजित्था की मानी जाती है।

✓ साक्ष्यों से ज्ञात होता है कि क्यांजित्था ने एक चोल शासक को भी बौद्ध बनने को बाध्य किया था। यह चोल शासक संभवतः किसी यात्रा के दौरान किडार पहुँचा था। मद्रास निवासी चोलों ने सामुद्रिक व्यापार के क्षेत्र में काफी विकास कर लिया था इसी दौरान उनका संबंध किडार से स्थापित हो चुका था। विद्वानों ने किडार का समीकरण पेगू से किया है। Mr. Harvey ने ~~साक्ष्यों~~ साक्ष्यों के आधार पर यह कहा है कि क्यांजित्था प्रथम बर्मी शासक था जिसने बोधगया के बोधिमंदिर का पुनरुद्धार करवाया था जहाँ भगवान बुद्ध ने ज्ञान पाई थी।

क्यांजित्था का संबंध चीन से था उसने 1106 ई० में एक दूत मण्डल चीन भेजा था। ~~इसी~~ चीनी साक्ष्यों से भी इस बात की पुष्टि होती है कि 1103 ई० में हाथियों के उपहार के साथ एक विशिष्ट मण्डल भेजा पुनः 1106 ई० में एक विशिष्ट मण्डल बर्मा से चीन गया जिसका स्वागत चीनी शासकों ने ससम्मान किया।

क्यांजित्था ने आनंद मंदिर निर्मित करवाने के साथ ही अनिरुद्ध द्वारा अधूरे बनवाये गये श्वेजीगॉन पेगोडा को पूरा करवाया, बोधगया के बोधिमंदिर का जीर्णोद्धार करवाया। कला एवं धर्म में इसकी इतनी अभिरुचि थी कि उसने आनंदमंदिर के ~~निर्माण~~ को

गाँव दान में दे दिया। इतना ही नहीं उसने लगभग अड़तालीस (40) पैगोडाओं का निर्माण कराया।

कला प्रेमी होने के साथ ही यह साहित्य प्रेमी भी था। विद्वानों के अनुसार उसके राज्य में तैलंग जैसे विद्वान भी थे, इसी कारण उसके अधिकांश लेखों में तैलंग भाषा का ही प्रयोग हुआ है।

क्यांजित्था ने लगभग 60 वर्षों तक पगान पर शासन किया था। संभवतः 1112 ई० में इसकी मृत्यु हुई जिसकी ~~स्म~~ स्मृति में इसके पुत्र यॉम्मुला ने मेजिडी स्तम्भ का निर्माण कराया जिसके चारों ओर बुद्ध के अभिलेख का ऐतिहासिक महत्व बहुत अधिक है।

क्यांजित्था की मृत्यु के बाद इसका पुत्र सिथु-इन्थु का पुत्र अलौंगसिथु बर्मा का शासक बना। ~~विभिन्न स्रोतों से यह स्पष्ट~~

विभिन्न स्रोतों से स्पष्ट है कि क्यांजित्था एक कुशल शासक और राजनीतिज्ञ के साथ ही सफल कूटनीतिज्ञ एवं दूरदर्शी ~~शासक भी था~~ होने पर भी यह एक धार्मिक व्यक्ति था जो कला मर्मज्ञ तथा साहित्यप्रेमी भी था। इसके शासनकाल में बर्मा में समस्त सुख शांति एवं समृद्धि का काल था।